पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 108-110

छोक्री (नागा) लोककथा

खुखुन्ये

✍ संग्रह एवं हिन्दी अनुवाद: खुत्सुलू दोज़ो

बहुत पहले की बात है, एक गाँव में एक लड़का रहता था। उसके सभी दोस्तों की शादी हो गयी थी। उसकी शादी नहीं हुई थी, इसलिए वह शर्म के कारण दोस्तों के साथ घूमने नहीं जाता था। उसने सामूहिक कार्यक्रमों में भी जाना छोड़ दिया था। यहाँ तक कि सामूहिक द्ज़ुखु से भी उसने पानी भरना छोड़ दिया। गाँव के लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे, इसलिए उसने अपना अलग से द्ज़ुखु खोदा और वह वहाँ से पानी भरने लगा। इसी तरह दिन बीत रहे थे। एक दिन प्रातःकाल जब वह द्ज़ुखु से पानी भरने के लिए गया तो देखा कि पानी मटमैला हो गया था अर्थात कोई उसके पानी मैला कर रहा था। अगले दिन भी यही हुआ। वह सोच में पड़ गया कि आखिर कौन मेरे द्ज़ुखु को प्रतिदिन मैला कर रहा है। उसने योजना बनायी कि मैं उस व्यक्ति को पकड़कर मार डालेगा। अगले दिन वह अपना भाला और दाव लेकर द्ज़ुखु के पास बैठ गया। जैसे ही सुबह हुई आकाश से बहुत ही सुंदर-सुंदर जलपरियाँ नीचे उतरीं। जलपरियाँ उसके द्ज़ुखु में नहाने लगीं और कुछ देर बाद नहाकर वापस आकाश में चली गईं। उस लड़के को अब पता चल चुका था कि मनुष्य नहीं बल्कि इन जलपरियों के स्नान के कारण ही उसका द्ज़ुखु सुबह-सुबह मैला हो रहा था। लड़का वापस घर चला गया और सोचने लगा- कोई लड़की तो मुझसे शादी करने को तैयार नहीं है, क्यों न मैं इन जलपरियों में से एक को पकड़कर उसी के साथ शादी करके घर बसा लूँ। अगले दिन प्रातः वह फिर से द्ज़ुखु गया। उसने देखा कि जलपरियाँ धरती में उतरने के बाद अपने पंख और पूँछ उतारकर द्ज़ुखु के किनारे रख, स्नान कर रही थीं। लड़के ने जलपरियों में जो सबसे सुंदर थी, उसके पंख और पूँछ को छुपा दिये। स्नान के पश्चात सभी जलपरियों ने अपने-अपने पंख और पूँछ पहने और वापस आकाश में चली गयीं। लेकिन एक जलपरी अपना पंख एवं पूँछ न पाकर इधर-उधर खोजने लगी।

सभी जलपरियों के चले जाने के बाद लड़का बाहर आया उसने जलपरी से कहा-

तुम मेरे से शादी कर लो।

तो जलपरी ने कहा- आप कृपा करके मेरे पंख और पूँछ वापस कीजिए। मेरे सभी दोस्त चले गये हैं, मुझे भी वापस आकाश में जाना है। मैं आकाश में रहने वाली हूँ और आप धरती पर निवास करने वाले हैं, हम दोनों की शादी संभव नहीं है।

लड़के ने कहा- यदि तुम मुझसे शादी नहीं करोगी, तो मैं तुम्हारे पंख एवं पूँछ वापस नहीं करूँगा। अंत में जलपरी को विवश होकर लड़के से शादी करनी पड़ी। लड़के ने जलपरी के पंख एवं पूँछ ऐसी जगह छुपाये थे कि

जलपरी कभी खोज न सकी। शादी के बाद दिन गुजरते गये, दोनों के घर दो संतानें हुईं - एक लड़का और एक लड़की। नाम था नाती और नारही।

उस दिन पिता घर में नहीं थे। माँ ने खेत से वापस आकर दोनों बच्चों से पूछा– तुम दोनों ने कभी तुम्हारे पिता को बहुत ही आश्चर्यजनक चीज को छुपाते हुए देखा है क्या?

बच्चों ने कहा- नहीं, कभी ऐसा तो नहीं देखा है। लेकिन जब पिताजी बाहर से आते हैं तो हमेशा जाकर मुर्गे के घर में कुछ देखते हैं।

माँ ने दौड़कर मुर्गे के घर में देखा तो पाया उसके पंख और पूँछ वही रखे हुए थे। माँ ने जल्द से जल्द अपने पंख एवं पूँछ को पहनकर अपने दोनों बच्चों से कहा – मैं अब जाकर आकाश में रहूँगी और तुम दोनों को भी आकाश में ले जाऊँगी। सूर्यास्त के समय मैं आकाश से एक धागे का गोला भेजूंगी। जब धागे का गोला हमारे घर के पास आयेगा तब तुम दोनों जाकर उस धागे को पकड़ना और उसके सहारे मैं तुम दोनों को आकाश में ले जाऊँगी और हम लोग आकाश में ही साथ रहेंगे।

पिताजी जब घर वापस आये तो उसने बच्चों से पूछा- तुम्हारी माँ कहाँ है ?

बच्चों ने कहा- माँ ने मुर्गे के घर में जाकर पंख एवं पूँछ खोज लिये और पहनकर आकाश में उड़ गयी। हम दोनों से कहकर गयी है कि सूर्यास्त के समय एक धागे की गोला छोड़ेगी। हम दोनों को भी उस धागे को पकड़कर आकाश में जाने को बोला है।

पिता ने मुर्गे के घर में जाकर देखा तो पंख एवं पूँछ दोनों गायब थे। पिता और बच्चे धागे का इंतजार करने लगे। सूर्यास्त के समय एक धागे का गोला उनके घर के पास आया। पिता ने बच्चों के स्थान पर अपने बारे में ही सोचा और बच्चों से पहले जाकर धागे को पकड़ लिया। पिता आकाश में चले गये। दोनों बच्चे गाँव में अनाथ की तरह घर-घर घूमकर खाना खाने लगे। दोनों प्रत्येक घर में जाकर खाना खाते थे, शुरू में गाँव के लोगों ने भी दोनों को खाना खिलाया था। धीरे-धीरे लोग परेशान होने लगे। गाँव के लोगों ने विचार–विमर्श किया और कहा – सभी गाँववाले दोनों बच्चों को खाना खिलाने के बाद उनके मस्तक पर बेख्री से मारकर वापस भेज दिया करें। गाँव के प्रत्येक घरवाले दोनों को खाना खिलाकर बेख्री से उनके मस्तक पर मारते और सोने के लिए भेज देते।

एक दिन रात दोनों ने एक बुढ़िया के घर खाना खाया। इसके बाद बुढ़िया ने कहा -अब तुम दोनों जाकर सो जाओ।

तब दोनों बच्चों ने कहा- दादी माँ, आप हम दोनों के मस्तक पर बेख्री से नहीं मारेंगी क्या?

बुढ़िया ने कहा- मैं क्यों मारूंगी तुम दोनों को? अनाथ बच्चों को मारना पाप है। तुम दोनों घर जाओ और सो जाओ।

दोनों बच्चों ने कहा- हम दोनों जब भी किसी के घर खाना खाते हैं तो बेख्री से मस्तक पर मारने के पश्चात ही हमें घर भेजा जाता है।

बुढ़िया ने कहा- ठीक है, लोग करते होंगे, लेकिन मैं ऐसा काम नहीं करूँगी। आज के बाद यदि लोग तुम दोनों को मारते हैं, तो वहाँ मत जाओ। तुमलोग मेरे पास आ जाया करो।

इस तरह से दोनों बच्चे कई दिनों तक बुढ़िया के घर पर खाना खाने लगे। एक दिन दोनों कपड़े में बहुत सारे रुगाले बांधकर बुढ़िया के घर आये। बुढ़िया ने पूछा– तुम दोनों इससे क्या करोगे?

दोनों ने कहा- इससे ओला तोड़ना है। दादी माँ, हम दोनों कल चले जायेंगे, लेकिन आपको एक बात बताकर जाना चाहते हैं। जल्दी ही बहुत भयानक आंधी-तूफ़ान आने वाला है। जिसमें गाँव के सभी खेतों की फसलें तहस-नहस होने वाली हैं। लेकिन आप अपने पानी और झूम की फसलों को चारों तरफ से गोलाई में पिना से ढक देना, जिससे आंधी-तूफ़ान आने पर भी आपकी फसलों को कोई नुकसान नहीं होगा। अगले दिन दोनों बच्चे चले गये। रास्ते में दोनों की मुलाकात कौवों के समूह से हुई। वे किसी पर्वत की चोटी पर जाकर काँव-काँव करते थे। दोनों बच्चे उसी दिशा में चलने लगे। उनके गाँव छोड़कर जाने के एक सप्ताह पश्चात आंधी-तूफ़ान और बरसात हुई। खूब ओले गिरें, जिससे गाँव की सारी फसल नष्ट हो गई। लेकिन बुढ़िया के खेत को हानि नहीं हुई।

गाँव वालों ने जब यह सुना तो सब बुढ़िया के पास गये और पूछने लगे। इस पर बुढ़िया ने कहा – मेरे घर में नाती और नारही दो बच्चे आते थे। दोनों ने मुझे आंधी तूफ़ान के बारे में पहले ही बता दिया था और पिना को फसलों के चारों तरफ से गोलाई में ढक देने को बोला था। मैंने वैसा ही किया, इसलिए मेरी फसलों को हानि नहीं हुई।

इसके बाद गाँव वालों ने एक बैठक बुलाई और विचार-विमर्श किया। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया था। वे बोले-हम लोगों ने अनाथ बच्चों के साथ दुर्व्यवहार किया था, इसका दंड मिला है। हम सबको अपने पापों के प्रायश्चित हेतु थुक्री करनी होगी। एक पशु की बलि देकर सबने रक्त से रुथो किया। परन्तु उस पशु का मांस किसको खाना चाहिए, ये गाँववालों को समझ नहीं आया। आखिर में सबने वार्तालाप करके तय किया कि गाँव के सभी पर्व त्योहार सिर्फ़ पुरुषों के लिए ही होते हैं, जबकि समाज में महिलाएँ अधिक काम करती हैं, अधिक कष्ट सहती हैं। पर उनके एक भी पर्व-त्योहार नहीं मनाया जाते हैं। अतः गाँव वालों ने निर्णय लिया कि बलि के पशु का मांस महिलाओं को खाने के लिए दिया जायेगा और यह दिन महिलाओं के दिन के नाम से जाना जायेगा।

इस लोक कथा के आधार पर आज भी पोरबा गाँव में खुखुन्ये मनाया जाता है।

शब्दार्थ :

1. भोजन वितरण त्योहार
2. तालाब, जहाँ से पानी भरा जाता है।
3. चार उँगलियों को मोड़कर मस्तक पे मारना
4. काली मिटटी से बना हुआ बर्तन।
5. कृमि की लकड़ी।
6. शोक के अवसर पर किया गया क्रिया कलाप।
7. पूजा आदि नियम।

संपर्क-सूत्र:
ईस्ट ददमापुर
डाक: पुराना बाजार त्रजला: ददमापुर,नागालैंड